प्रदेश में पहली बार देखने-सुनने में असमर्थ बच्चे ऑडियो-वीडियो विजुअल सिस्टम से सीखेंगे, खास कार्यक्रम होंगे तैयार, 5वीं तक के बच्चे विशेष तरीके से पढ़ सकेंगे

वर्चुअल दुनिया से रूबरू होंगे विशेष बच्चे, दिव्यांगों के लिए शुरू होगी डिजिटल लैब

इंदौर। नवदुनिया प्रतिनिधि

अब विशेष बच्चे भी वर्चुअल दुनिया से रूबरू हो सकेंगे। प्रदेश में पहली बार मानसिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए सामाजिक न्याय विभाग के प्रयासों से डिजिटल लैब तैयार की जा रही है। जिला प्रशासन ने इसका प्रस्ताव शासन को भेजा है।

इसके बाद देखने, सुनने और बोलने में असमर्थ बच्चे देश-दुनिया की नई-नई जानकारी ऑडियो-वीडियो सिस्टम से जुटा सकेंगे। इसके माध्यम से स्मार्ट एजुकेशन भी लेंगे। इसके लिए शहर की दो संस्थाओं का चयन किया गया है। महेश दृष्टिहीन कल्याण संघ में दृष्टिबाधित, अस्थिबाधित और मूक-बधिर बच्चों के लिए यह लैब तैयार की जाएगी। इसमें नए डिवाइस की मदद से विशेष प्रोग्राम तैयार किए जाएंगे।

पांचवीं कक्षा के स्तर तक के बच्चे यहां विशेष तरीके से पढ़ सकेंगे। शासन द्वारा इसके लिए शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है। बच्चों को स्कूली शिक्षा के अलावा सामान्य ज्ञान, मनोरंजन, खेल, प्रेरणादायक कहानियों सहित भविष्य की योजनाओं के लिए तकनीकी प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

'अपनी दुनिया' में रहने वाले बच्चे भी जुड़ेंगे

ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे अक्सर अपनी ही दुनिया में खोए रहते हैं। इनके लिए टेलीफोन नगर स्थित अरुणाभ संस्था में लैब शुरू की जा रही है। इसमें बड़ी उम्र के बच्चों को भी फायदा देने की कोशिश की जा रही है, ताकि भविष्य में वे किसी रोजगार से जुड़ सकें। इन बच्चों के साथ शिक्षा के क्षेत्र में पहली बार ऐसा प्रयोग किया जा रहा है।

ब्रेल लिपि या सांकेतिक भाषा में तैयार पाठ्यक्रम की बाध्यता खत्म

विशेषज्ञों के मुताबिक दृष्टिबधित विद्यार्थी ब्रेल लिपि और बधिर बच्चे सांकेतिक भाषा में पढ़ते है। वे उतना ही पढ़ पाते है जितना उनकी किताबों में लिखा है। इन विशेष बच्चों के लिए सबसे बड़ी समस्या पढ़ने की होती है, क्योंकि तय पाठ्यक्रम के अलावा जानकारी जुटाने के लिए उनके पास कोई साधन नहीं होता। डिजिटल लैब के जरिए वे सीडी, पैन ड्राइव सहित अन्य डिवाइस में डाले गए कई प्रोग्राम सुन या देख सकते है। आईटी विशेषज्ञों द्वारा अलग-अलग स्तर पर खास डिवाइस तैयार किया गया है।

तहसील स्तर पर भी खुले

दिव्यांगों को डिजिटल शिक्षा की ट्रेनिंग देने वाले स्वागत सिन्हा ने बताया कि डिजिटल लैब दिव्यांगों की जिंदगी में सूचना क्रांति का काम करेगी। इसे तहसील स्तर पर भी तैयार होना चाहिए। जिला पंचायत सीईओ नेहा मीणा के मुताबिक विशेष बच्चों को सामान्य जिंदगी मिल सके, इसके लिए यह एक पहल है।

मुंबई, बेंगलुरु और देहरादून में हुआ सफल प्रयोग

डिजिटल लैब का सफल प्रयोग मुंबई, बेंगलुरु और देहरादून में हो चुका है। इंदौर में प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए प्रशासन ने कोचिंग क्लास शुरू की है, लेकिन यह ऑडियो विजुअल नहीं है। इस लैब से इसमें मदद मिलेगी।

आयकर दाताओं के लिए ई-असेसमेंट योजना प्रारंभ

आष्टा। केंद्र सरकार ने आयकर विभाग में बिना सीधे संपर्क वाली ई-असेसमेंट योजना की शुरुआत की गई है। इस योजना से करदाताओं को कर अधिकारियों के आमने-सामने की जरुरत नहीं पड़ेगी। शुरुआत में राष्ट्रीय ई-आकलन केंद्र के तहत आयकर मामलों का चयन किया गया है।

कर सलाहकार अभिषेक सुराना ने बताया कि केंद्रीय बजट के दौरान इस संबंध में घोषणा हुई थी, उसी की अनुपालन में अब यह योजना शुरु की गई है। देश में इनकम टैक्स एक्ट 1961 में लागू हुआ था। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड द्वारा हर वर्ष करदाताओं की रिटर्न की स्क्रूटनी, संवीक्षा, में लेने के लिए नए नियम बनाए जाते हैं। इन नियमों के अनुसार आयकर रिटर्न की स्क्रूटनी की जाती है। इसके अलावा स्क्रूटनी में कर अधिकारी करदाता से सवाल पूछकर और कागजों की जांच करके उसका फैसला करते हैं। उन कागजों में कर चोरी या कमी पाई जाने पर करदाता को कर ब्याज व पेनल्टी लगाई जाती है, जो उसे चुकाना पड़ती है। आयकर विभाग के सूत्रों का कहना है कि नई पहल से आकलन प्रक्रिया में दक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही आएगी। करदाताओं और कर अधिकारियों के बीच आमना-सामना की जरुरत नहीं होगी। राष्ट्रीय ई-आकलन केंद्र देशभर में अधिकारियों के दखल के बिना ई-आकलन योजना में मदद करेगा, करदाताओं को लाभ होगा।